Mr.Sanjay Kumar
(Assistant Professor)
Dept.Of Psychology
C.M.J. College, Donwarihat
Khutauna,Madhubani
9905430675(Mobile/WhatsApp)
Email- sanjayuttam725@gmail.com

B.A. PART -II. PAPER-III

मनोविकृति विज्ञान के उपागम: व्यवहारवादी उपागम (MODEL OF PSYCHOPATHOLOGY: BEHAVIOURAL MODEL)

असामान्य व्यवहार की व्याख्या का यह व्यवहारवादी उपागम अधिगम(learning) की अवधारणा पर आधारित है। व्यवहारवादी उपागम में असामान्य व्यवहार के कारकों में अधिगम की दो अवधारणाएं हैं- पहला, व्यवहारवादी उपागम असामान्य व्यवहार की व्याख्या फ्रायड के मनोविश्लेषण सिद्धांत के आत्मनिष्ठ दृष्टिकोण (आंतरिक एवं अदृष्टिगोचर कारकों/internal & unobservable) के स्थान पर बाह्य एवं दृष्टिगोचर(external and observable) अधिगम कारकों के आधार पर करता है। दूसरा,असामान्य व्यवहार के विकास में दो प्रकार के अधिगम अर्थात (क) क्लासिकी अनुकूलन (classical conditioning) तथा (ख) साधनात्मक या प्रावर्तन अनुकूलन (instrumental or operant conditioning) का हाथ होता है।

क) क्लासिकी अनुकूलन(classical conditioning) - क्लासिकी अनुकूलन को रूसी शरीरशास्त्री ***पैवलव (Pavlov,1904)*** ने कुत्तों के लार गिराने के व्यवहार के अध्ययन के आधार पर एक सिद्धांत के रूप में प्रस्तुत किया था।इसके अलावा ***वाटसन तथा रेनर (Watson & Reynor,1920***) ने ***अलबर्ट(Albert***) नामक बालक में इसी अनुकूलन प्रक्रिया द्वारा उजले खरगोश के प्रति भय विकसित किया था, जिसके परिणामस्वरूप बाद में वह बालक सभी उजली वस्तुओं से डरने लगा।असामान्य व्यवहार के विकास में क्लासिकी अनुकूलन का महत्वपूर्ण स्थान है सभी अविवेकी भय की व्याख्या इस अनुकूलन के आधार पर की जा सकती हैं। इस अनुकूलन के आधार पर व्यक्तियों में कई तरह के फोबिया(phobia) विकसित हो जाते हैं।कभी-कभी इसी अनुकूलन के आधार पर अनियंत्रित तथा गंभीर असामान्य व्यवहार भिन्न-भिन्न रूपों में विकसित हो जाते हैं।

ख) साधनात्मक या प्रवर्तन अनुकूलन (instrumental or operant conditioning) - असामान्य व्यवहार के विकास में साधनात्मक अनुकूलन की भूमिका महत्वपूर्ण है। इसमें पुरस्कृत प्रतिक्रिया के युग्मन(pairing) को अनुकूलन का आधार माना गया है। साधनात्मक अनुकूलन में प्रबलन(reinforcement) के महत्व पर बल दिया गया है इसमें धनात्मक प्रबलन को पुरस्कार (reward) तथा नकारात्मक प्रबलन को दंड (punishment) कहा गया है।पुरस्कार की प्राप्ति से क्रियात्मक व्यवहार में बढ़ोत्तरी देखी जाती है जबकि दंड से क्रियात्मक व्यवहार में कमी आती है। पुरस्कार पाने के लिए प्राणी का व्यवहार हमेशा साधनात्मक होता है।इस अवधारणा को ***स्किनर (Skinner, 1938)*** ने अपने प्रयोग के माध्यम से (चूहे पर किया गया प्रयोग) प्रदर्शित किया है और 'साधनात्मक या क्रियाप्रसूत सिद्धांत' के रूप में प्रस्तुत किया है। असामान्य व्यवहार के विकास में प्रवर्तन अनुकूलन के कारण व्यक्ति पुरस्कार पाने के लिए अनुपयुक्त व्यवहार (inappropriate behaviour) करना सीख लेता है।व्यक्ति के प्रतिहार व्यवहार(withdrawal behaviour) की व्याख्या प्रवर्तन अनुकूलन के आधार पर की जा सकती है।जैसे- जब व्यक्ति वास्तविकता का सामना नहीं कर पाता है तो वह स्वैर कल्पना(fantasy) करने लगता है। क्योंकि स्वैर कल्पना वास्तविक जगत की अपेक्षा अधिक सुखद होता है।इसी प्रकार कुछ लोगों को दूसरों को कष्ट देने, हानि पहुंचाने या डराने-धमकाने से ही लाभ या पुरस्कार प्राप्त होता है। फलत: वे असामाजिक व्यवहार (anti-social behaviour) करना सीख लेते हैं। जो असामान्य व्यवहार के रूप में परिलक्षित होता है।

मनोविकृतिविज्ञान के मॉडल के रूप में व्यवहारवादी उपागम के द्वारा पता चलता है कि का असामान्य व्यवहार के विकास में इसके कई योगदान है। फिर भी मनोवैज्ञानिकों द्वारा कई आधारों पर इस उपागम की आलोचना (criticism) की गई है:-

i) इस उपागम से विक्षिप्त/विक्षुब्ध व्यक्ति (disturb individual) के अधिकतर जटिल व्यवहारों की व्याख्या संभव नहीं हो पाती है।

ii) यह उपागम विभ्रमों(hallucinations) तथा व्यामोह (delusions) की समुचित व्याख्या करने में सक्षम नहीं है।

iii) चूंकि अनुकूलन(conditioning) एक स्वचालित प्रक्रिया(automatic process) है अतः:इस सिद्धांत में चिंतन की उपेक्षा की गई है।

निष्कर्षत: व्यवहारवादी उपागम के उपरोक्त आलोचनात्मक विश्लेषण से यह पता चलता है कि असामान्य व्यवहार के विकास की व्याख्या इसके माध्यम से सीमित स्तर पर की जा सकती है।

22/07/2020. - Sanjay Kumar